NOVEMBER 2023 **70213/LE13A/DE13A**

Time : Three hours Maximum : 75 marks

SECTION A — (5 × 3 = 15 marks)

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक उत्तर 50 शब्दों में हों।

1. कबीर प्रेम की गली को अत्यंत संकीर्ण क्यों कहते हैं?
2. गोपियाँ उद्धव से अपनी व्यथा किस तरह बताती हैं?
3. तुलसीदास अपने आप को भिखारी कहते हुए कैसी विनती करते हैं?
4. बिहारीलाल धतूरे से भी सोना अधिक मादक क्यों कहते हैं?
5. हिन्दी साहित्य को कितने कालों में बाँटा गया है? और उनके नाम बताइए।
6. 'सूफी' से तात्पर्य क्या है?
7. 'अष्टछाप' के कवियों के नाम गिनाइए।
8. 'दरबारी साहित्य से तात्पर्य क्या है?' किन्हीं चार दरबारी कवियों के नाम लिखिए।

Hindi - III

SECTION B — (4 × 5 = 20 marks)

किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

9. जल में कुंभ-कुंभ में जल, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ, जल जलहि समाना, यह तथ कहौ गियानी।।

10. मन क्रम वचन मैं तुम्हें ठावत व्रज को तुरत पानो।
पूरब ब्रह्म सवाल अविनासी ताके तुम हौं ज्ञाता।।
रेख न रूप, जाति कुल नाहीं, जावे नहिं पितु-माता।।
वह मत दै गोपिन कहँ आबहु बिरह-नदी में भासति।।

11. जाकि प्रिय न राम-वैदेही।
सों छांडिये कोटि बैरि सम, जद्यपि राम सनेही।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बँधु, भरत महतारी।।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितनि, भये मृदु मंगलकारी।।

12. सूल सेज राणा भेजो, दीज्यो मीराँ सुलाय।
साँझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय।
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे बिछन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती गिरिधर पर बलि जाय।।

13. मेरी भव बाधा हरौ राधा नागीर सोइ।।
जा तन की झाई परे स्यामु हरित-दुति होइ।।

14. दृग उरझत टूटत कुटुम्ब जुरत चतुर चित्त प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हिये दई नई यह रीति।।

15. सीख सीखने योग्य सब, भ्रम संशय बिन सीख।
कर उसके अनुसार फिर, योग्य आचरण ठीक।।

SECTION C — (4 × 10 = 40 marks)

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रत्येक उत्तर 500 शब्दों में हों। (2 × 10 = 20)

16. सूरदास की भक्ति भावना का परिचय दीजिए।

17. तिरुवल्लुवर के पठित दोहों का सारांश लिखिए।

18. बिहारीलाल की काव्यगत विशेषताओं का परिचय दीजिए। (1 × 10 = 10)

19. वीरगाथा काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

20. रीतिकालीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

21. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। (2 × 5 = 10)
(a) चन्द बरदाई
(b) जायसी
(c) भूषण
(d) घनानंद